



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 356]

नई दिल्ली, सोमवार, अगस्त 22, 2005/श्रावण 31, 1927

No. 356]

NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 22, 2005/SRAVANA 31, 1927

वित्त मंत्रालय

( राजस्व विभाग )

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 अगस्त, 2005

सं. 32/2005-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क ( एन.टी. )

सा.का.नि. 539(अ).—केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो गया है कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 (1986 का 5) की पहली अनुसूची के अध्याय 48 के अंतर्गत आने वाले "अखबारी कागज, रीलों में" पर केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 3 के अधीन उत्पाद शुल्क के उद्ग्रहण (जिसके अंतर्गत उसका अनुद्ग्रहण भी है) के संबंध में एक प्रथा, जो साधारणतया प्रचलन में थी और ऐसा "अखबारी कागज, रीलों में" उत्पाद शुल्क के लिए दायी था जिसका 1 मार्च, 1988 को प्रारम्भ होने वाली और 8 जुलाई, 2004 को समाप्त होने वाली अवधि के दौरान उक्त प्रथा के अनुसार उक्त अधिनियम की धारा 3 के अधीन उद्ग्रहण नहीं किया जा रहा था।

2. अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 11ग द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, ऐसे "अखबारी कागज, रीलों में" पर उक्त अधिनियम के अधीन उद्ग्रहणीय उत्पाद शुल्क का उक्त प्रथा के कारण संदाय नहीं किया गया था, और ऐसे "अखबारी कागज, रीलों में" की बाबत जिस पर उक्त उत्पाद शुल्क उक्त प्रथा के अनुसार पूर्वोक्त अवधि के दौरान उद्ग्रहीत नहीं किया जा रहा था, संदत्त किए जाने के लिए अपेक्षित नहीं होगा :

परन्तु इस अधिसूचना के अधीन फायदा ग्राह्य नहीं होगा जब तक—

- (i) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 (1986 का 5) के अधीन जारी की गई अधिसूचनाओं के साथ पठित उक्त अधिनियम के अध्याय 48 के टिप्पणों में यथा परिभाषित "अखबारी कागज" की परिभाषा में "अखबारी कागज, रीलों में" का समावेश नहीं किया हो, और
- (ii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 (1986 का 5) की पहली अनुसूची के शीर्षक सं. 48.01 के अधीन आने वाले "अखबारी कागज" की निकासी के लिए उक्त अधिनियम की धारा 5क की उप-धारा (1) या केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) के अधीन समय-समय पर जारी अधिसूचनाओं द्वारा अधिकथित शर्तें उत्पाद शुल्क के संदाय के बिना पूरी न की गई हों।

[फ़. सं. 61/8/2004-सीएक्स. 4]

अभय कुमार श्रीवास्तव, उप सचिव

**MINISTRY OF FINANCE****(Department of Revenue)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 22nd August, 2005

**NO. 32/2005-CENTRAL EXCISE (N.T.)**

**G.S.R. 539(E).**—Whereas the Central Government is satisfied that a practice was generally prevalent regarding levy of duty of excise (including non-levy thereof) under Section 3 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944) (hereinafter referred to as the said Act), on “Newsprint, in reels” falling under Chapter 48 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986) and that such “Newsprint, in reels” were liable to duty of excise which was not being levied under Section 3 of the said Act according to the said practice, during the period commencing on the 1st day of March, 1988 and ending with the 8th day of July, 2004.

2. Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Section 11C of the said Act, the Central Government hereby directs that the duty of excise leviable under the said Act on such “Newsprint, in reels”, but for the said practice, shall not be required to be paid in respect of such “Newsprint, in reels” on which the said duty of excise was not being levied during the aforesaid period in accordance with the said practice :

Provided that the benefit under this notification shall not be admissible unless—

- (i) the “Newsprint, in reels” was covered by the definition of “Newsprint” as defined in the Notes to Chapter 48 of the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986) read with notification(s) issued thereunder, and
- (ii) the conditions laid down by notifications, issued from time to time under sub-section (1) of Section 5A of the said Act or sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, for clearance of “Newsprint” falling under heading No. 48.01 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986) without payment of duty of excise, had been fulfilled.

[F. No.61/8/2004-CX. 4]

ABHAI KUMAR SRIVASTAV, Dy. Secy.